गुण (Merits) — प्रजातंत्र के गुण निम्नलिखित हैं —

(i) जनमत पर आधारित :- जनता अपने प्रतिनिधियों को चुनकर प्रजातांत्रिक शासन का संचालन करती है जनता के प्रतिनिधि ही कानूनों का निर्माण करते हैं। चूँकि जनसम्मति इसका आधार है, इसलिए शासन और शासितों में मधुर संबंध बना रहता है।

ii) समानता, स्वतंत्रता तथा भ्रातृत्व पर आधारित :- इसके अंतर्गत जाति, वंश, धर्म, लिंग, धन इत्यादि का भेदभाव नहीं होता। प्रत्येक नागरिक कानून की नजर में समान होता है।

iii) राष्ट्रीयता एवं देशप्रेम की भावना को प्रोत्साहन :- प्रत्येक व्यक्ति महसूस करता है कि कानून एवं शासन का वह स्वयं निर्माता है। इससे नागरिकों में देश के प्रति भक्ति एवं निष्ठा का विकास होता है।

iv) सार्वजनिक कल्याण - इसके अंतर्गत बिना किसी भेदभाव के समस्त नागरिकों का हितसाधन किया जाता है। यह लोककल्याण की भावना पर आधारित है।

v) राजनीतिक जागृति — चुनाव आदि में भाग लेकर जनता अपने मौलिक अधिकारों को समझती है और अपने इच्छानुसार जनप्रतिनिधियों के माध्यम से शासन का संचालन करती है।

vi) क्रांति एवं विद्रोह की संभावना :- चूँकि चुनाव हमेशा होता रहता है, इसलिए सरकार को जनता नियंत्रित करती है और अपने असंतोष का बदला गोली से न लेकर मतदान से लेती है।
(bullet) (ballot)

vii) व्यक्तित्व का विकास - यह हमेशा मानवीय पक्ष पर जोर देता है और लोगों के सर्वांगीण विकास के लिए सारी सुविधाएँ प्रदान करता है।

viii) नागरिक विकास :- चूँकि देश के नागरिक सार्वजनिक कार्यों में सक्रिय भाग लेते हैं, इसलिए उनमें बौद्धिक एवं मानसिक गुणों की वृद्धि होती है। दोनों ही नागरिक अपनी प्रतिभा और शक्ति के आधार पर राज्य के किसी भी पद पर पहुँच सकता है।

अवगुण/दोष (Demerits) :-

प्लेटो, अरस्तू आदि यूनानी दार्शनिकों ने प्रजातंत्र को सरकार का विकृत रूप बताया है। कुछ लोगों ने इसे 'भीड़तंत्र' कहा है तो अन्य लोगों ने इसे 'बेवकूफों का शासन' कहा है। प्रजातंत्र के अवगुण निम्नलिखित है -

(i) अयोग्यों का शासन :- प्लेटो, अरस्तू, एच. जी. वेल्स, सर हेनरी मेन आदि विद्वानों ने प्रजातंत्र

को बुद्धिहीनों तथा अयोग्यों का शासन कहा है। चूंकि अविकसित समाज में अज्ञानी लोगों की संख्या अधिक होती है इसीलिए शासन संचालन भी उन्ही के हाथों में होता है।

(ii) अनुत्तरदायी शासन – इस व्यवस्था में शासन-सत्ता एक अव्यवस्थित भीड़ के हाथ में रहती है जिसके चलते सार्वजनिक कार्यों के संदर्भ में उत्तरदायित्व का अभाव रहता है।

(iii) वीर-पूजा :– प्रजा अपनी अज्ञानता के कारण एक नेता को पूजने लगती है। वीर-पूजा की भावना के परिणामस्वरूप ही फ्रांस में नेपोलियन और जर्मनी में हिटलर तानाशाह बने।

(iv) बहुमत का अत्याचार :– चूंकि प्रजातंत्र बहुमत का शासन है। इसीलिए बहुमत अल्पसंख्यकों के हितों का गला घोंटने लगता है। इसमें 51 प्रतिशत जनता 49 प्रतिशत लोगों पर शासन करती है। योग्य और अल्पमत व्यक्तियों का शासन में कोई स्थान नहीं होता।

(v) धनवानों का शासन – धनी और महत्वाकांक्षी व्यक्ति पैसों के बल पर गरीबों के मत खरीदकर निर्वाचित होते जाते हैं। निर्वाचित होने के बाद वे धनवानों के हितों पर ही ध्यान देते हैं और गरीबों को भूल जाते हैं।

Chapter continues...